प्राथमिक समूह और द्वितीयक समूह में अन्तर
(Distinction Between Primary and Secondary Group)

सामाजिक समूह का सर्वाधिक प्रचलित वर्गीकरण प्राथमिक समूह एवं द्वितीयक समूह है। ये दोनों ही समूह मानव जीवन के आधारभूत लक्ष्यों से संबंधित है। इन दोनों समूहों की प्रकृति व अवधारणा एक दूसरे से भिन्न है, इस दृष्टि से प्राथमिक एवं द्वितीयक समूहों के अन्तर निम्नलिखित है:—

(1) प्राथमिक समूह का आकार छोटा जबकि द्वितीयक समूह का आकार बड़ा :—

प्राथमिक समूहों के सदस्यों की संख्या 2 से लेकर 50 या 60 तक ही हो सकती है, कभी भी यह हजारों, लाखों व करोड़ों में नहीं होती। जैसे — परिवार, पड़ोस व खेल-समूह का आकार छोटा होता है, जबकि द्वितीयक समूह का आकार बड़ा होता है, इसके सदस्यों की संख्या की कोई सीमा नहीं होती, इनमें सदस्यों की संख्या लाख व करोड़ तक हो सकती है। जैसे — राजनीतिक दल राज्य व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएँ आदि बड़े आकार के समूह है।

(2) प्राथमिक समूह में घनिष्ठता की अधिकता, जबकि द्वितीयक समूह में घनिष्ठता की कमी:—

प्राथमिक समूहों के सदस्यों के बीच निरन्तर गहन अन्तःक्रिया होती है, जिससे घनिष्ठता का विकास होता है, जबकि द्वितीयक समूह के सदस्यों में गहन अन्तःक्रिया का अभाव है तथा एक दूसरे पर विश्वास व आत्मा का भी अभाव है। अतः द्वितीयक समूह में घनिष्ठता का अभाव पाया जाता है।

(3) प्राथमिक समूह अनौपचारिक जबकि द्वितीयक समूह औपचारिक होते है:—

प्राथमिक समूह अनौपचारिक होते है। ऐसे समूहों में हर व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से एक दूसरे से

जानते-पहचानते हैं। वे घर के व्यक्ति जैसे होते हैं, दिल खोलकर मिलते हैं और व्यवहार के ढंग अपनापन से भरे होते हैं।

जबकि द्वितीयक समूह औपचारिक होते हैं। इनके सदस्यों के बीच आत्मीयता व अपनापन नहीं होता है। उनके बीच सम्बन्ध व व्यवहार सिर्फ नियम-कानून के अन्तर्गत होते हैं परस्पर घनिष्ठता भी उतना ही रहता है जितना समूह के सदस्य के उद्देश्य को पूरा करने के लिए होता है।

④ प्राथमिक समूह में 'हम की भावना' जबकि द्वितीयक समूह में 'मैं की भावना' :—

प्राथमिक समूह में 'हम की भावना' पायी जाती है। इसके सदस्यों में इतनी अधिक घनिष्ठता व अपनापन होता है कि व्यक्ति का 'स्व' यानि 'मैं' 'हम' में बदल जाता है। एक-दूसरे के लिए सहयोग व त्याग काफी होता है।

जबकि द्वितीयक समूह में 'मैं की भावना' होती है, ऐसे समूह में व्यक्तिगत स्वार्थ ही प्रधान होता है। हर एक सिर्फ अपने बारे में ही सोचते एवं करते हैं।

⑤ प्राथमिक समूह में प्रत्यक्ष सहयोग तथा द्वितीयक समूह में अप्रत्यक्ष सहयोग :—

प्राथमिक समूह में प्रत्यक्ष सहयोग पाया जाता है। इसके सदस्य हर एक स्थिति में प्रत्यक्ष रूप से मिल-जुलकर काम करते हैं। परिवार में माता के कार्यों में पुत्री का सहयोग, पुत्र के कार्यों में पिता का सहयोग, बहन के कार्यों में भाई का सहयोग आदि हमेशा प्रत्यक्ष रूप में होता है।

जबकि द्वितीयक समूह में अप्रत्यक्ष सहयोग होता है। ऐसे समूह में व्यक्ति निर्धारित

कार्यों को करते हैं, ताकि समूह का उद्देश्य पूरा हो।

(6) प्राथमिक समूह का स्वतः विकास जबकि द्वितीयक समूह जान-बुझकर का विकसित होता है:—

प्राथमिक समूह का स्वतः विकास होता है, इसका निर्माण नहीं किया जाता, ये धीरे-धीरे स्वतः विकसित होते हैं।

जबकि द्वितीयक समूह का निर्माण जान-बुझकर किया जाता है, ऐसे समूह विशेष उद्देश्यों की पूर्ती हेतु बनाये जाते हैं। अतः जब हमारा कोई विशेष उद्देश्य होता है, तो उसकी पूर्ती हेतु जान-बुझकर समूहों की स्थापना की जाती है।

(7) प्राथमिक समूह के व्यक्तियों का दायित्व असीमित होता है जबकि द्वितीयक समूह के व्यक्तियों का दायित्व सीमित होता है:—

प्राथमिक समूह में व्यक्तियों का दायित्व असीमित होता है। ऐसे समूहों में व्यक्ति किस सीमा तक दायित्व का निर्वाह करेगा, उसका कोई अन्त नहीं है। परिवार में व्यक्ति एक-दूसरे के लिए क्या कितना करता है और कितना कर सकता है। यह सर्वविदित है। अपनी जान तक की बाजी लगा देता है।

जबकि द्वितीयक समूहों में व्यक्तियों का दायित्व सीमित होता है। ऐसे समूहों में व्यक्ति अपने दायित्व का निर्वाह उतना ही करता है जितना नियम के अनुसार निर्धारित होते हैं।

(8) प्राथमिक समूह स्थायी होते हैं जबकि द्वितीयक समूह अस्थायी होते हैं:—

प्राथमिक समूह प्रायः स्थायी होते हैं। समाज व व्यक्ति के अस्तित्व के लिए इसके कार्य आवश्यक हैं। इसके अभाव में स्वस्थ व्यक्तित्व व समाज की की कल्पना नहीं की जा सकती जबकि द्वितीयक समूह अस्थायी होते हैं। ऐसे समूह खास उद्देश्य से संबंधित होते हैं।